राजस्थानी चित्रशैली में रसोत्पत्ति

आकाश तोमर
एम.ए. चित्रकला
डी0ए0वी0 डिग्री कॉलेज, मुजफ्फरनगर
ईमेलः *akashtomar1972@gmail.com*

Reference to this paper should be made as follows:
Received: 20.03.2025
Approved: 22.06.2025

आकाश तोमर

राजस्थानी चित्रशैली में रसोत्पत्ति

Artistic Narration 2025, Vol. XVI, No. 1, Article No.13 pp. 088-091

Online available at:
https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-june-2025-vol-xvi-no1
Referred by:
DOI:*https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.013*

सारांश

कला मानव की सहज अभिव्यक्ति है प्राचीन काल से ही कला मानव मन पर अपना प्रभाव डालती रही है, प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक कला का मानव मस्तिष्क पर प्रभाव पड़ता रहा है वह विभिन्न माध्यमों से कला अभिव्यक्ति करता आया है। कभी उसने कंद्राओ को कभी पत्थरों, पहाड़ों को, अपना माध्यम बनाकर तथा कभी उसने दैनिक प्रयोग में आने वाले बर्तन भाड़ों पर अपने मन की अभिव्यक्ति को चित्रित किया है।

भारतीय चित्रकला आरम्भ से ही रस सृजन के रूप में प्रतिष्ठत है और राजस्थान की वीर भूमि में यह प्रतिष्ठता और परिस्कृत होकर उभरी है। इतिहास साक्षी है कि राजस्थान का गौरवशाली इतिहास यह स्पष्ट करता है कि राजस्थान के चित्रकारो ने सदैव लोक जीवन को अभिप्राय के रूप में चित्रित किया है। विभिन्न उत्सवों, तीज, त्यौहारों और संस्कारों में चित्रित विभिन्न कला कृतियों में रसों की भरमार है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.013

रस शब्द की उत्पत्ति ''रस्यते यः सः इति रसः'' जिसका अर्थ जो चखा जाये या जिसका अस्वाद किया वह रस है।[1] आचार्य विश्वनाथ ने 'साहित्य दर्पण' में वाक्य की परिभाषा देते हुए लिखा हैं। 'वाक्यं रसात्मक काव्यं' भरत मुनि ने नाटय शास्त्र में व्याक्खा की है कि विभावानुभाव्व्यभिचारि स योगाद्रसनिष्पत्तिः' अर्थात् विभाव अनुभाव और संचारीभाव के संयोग से रसोंत्पति की अभिव्यक्ति होती है। साधारणतय रस का तात्पर्य आनन्दानुभूति से है रसानुभव से ही सौन्दर्य का अनुभव होता है। बिना रस के सौन्दर्य का बोध नहीं हो सकता। रस आनन्द और सौन्दर्य परस्पर आविच्छिन रूप से संबंधित है रस इसलिए ललित कलाओं का मूल रूप माना गया है।विष्णु धर्मोतर पुराण के तृतीय खण्ड में केवल भूमि बन्धन लेप, रंग मान रूप और रंग लक्षण आदि चित्र के दृश्य तत्वों का ही विवेचन नही किया गया वरन् उसमें रस और भाव आदि तत्वों पर भी विचार हुआ है जैसे काव्य और नाटक में रस ही सर्वस्व है और रस विहिन काव्य अथवा नाटक निरर्थक है वैसे ही चित्र की आत्मा भी रस ही है। रस के बिना कोई अर्थ प्रवृत्त नही होता अर्थात् ललित कालाओं में सौन्दर्य अनुभव का मूल रस ही है। विभिन्न कलाओं से रसिक लोग हदयवत् स्थायी भावों का मन से आस्वाद करते है। यह रस से ही सम्भव है।[3]

नाट्य शास्त्र में आठ रस माने गये है। जिनमें श्रृंगार, हास्य, करूण, वीर, रोद्र, भयानक, वीभत्स और अद्भुत रस है शान्त रस को इस सूची में स्थान प्राप्त नही है। परन्तु ललित कलाओं में शान्त रस को भी सम्मिलित किया गया है विष्णु धर्मोत्तर पुराण में भी नौ रसों का स्पष्ट उल्लेख है। राजस्थानी चित्र शैली में ये सभी नौ रसों की भरमार पायी जाती है। अजन्ता की परम्परा का निर्वाह करने वाली राजस्थानी चित्रकला का अपना एक इतिहास है यहां की वीर भूमि के कण–कण में शौर्य की गाथाएं, सभ्यता और संस्कृति के पद चिन्ह चित्रकला, स्थापत्य कला, आदि के रूप में बिखरे पड़ें है। राजस्थान राजपूतो की भूमि होने के कारण यहा वीर रस तथा श्रृगांर रस की प्रधानता रही है। यहां के राजा व सामन्त युद्धप्रिय होने के साथ–साथ सौन्दर्य के पुजारी रहे है। सौन्दर्य के प्रति उनकी आगाध श्रद्धा थीं। पूरे राजस्थान में बल्लभ सम्प्रदाय होने के कारण राधा कृष्ण की अनेक श्रृंगारिक लीलाओं का चित्रण इस शैली में हुआ है। भक्ति और श्रृंगार का संजीव चित्रण जितना राजस्थानी चित्रशैली में देखने को मिलता है। उतना अन्य कहीं नही मिलता।

राजस्थानी चित्रशैली में श्रृंगार रस :–

राजस्थानी चित्रशैली में श्रृंगार रस का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। श्रृंगार के दोनों पक्ष संयोग और वियोग का राजस्थानी चित्रकारों ने श्रेष्ठता के साथ चित्रित किया है। समस्त रसों में श्रृंगार रस को रस राज कहा जाता है। इस रस में मानव जीवन की समस्त अनुभूतियों आ जाती है। इस रस का आधार प्रेम है। राजस्थानी चित्रशैली में श्रृंगार रस को प्रधानता से चित्रित किया गया है। राधा–कृष्ण के प्रेम को चित्रकारों ने प्रतिक के रूप में चित्रित किया गया है।

1. डा0 जगदीश चन्द्र (इन्दु) काव्याग परिचय पृष्ठ–**2**
2. डा0 वीणा अग्रवाल विष्णु धर्मोत्तर पुराण मे चित्रकला विधान पृष्ठ–**37**
3. नाटय शास्त्र – 6/33
4. डा0 सी0एल0झां कला के दर्शनिक तत्व पृष्ठ–**300–301**
5. डा0 सुरेन्द्र सिंह राजस्थानी चित्र शैली में आलेखन पृष्ठ–**18**

वियोग रसः–

राजस्थानी चित्र शैली में जहां संयोग रस की बाहुलता है वहीं वियोग रस का भी हदय स्पर्शी चित्रण मिलता है नायिका नायक की इंतजार में खोई सी बैठी है तो कहीं नायक नायिका के प्रेम में वशीभूत होकर उनका इंतजार करते हुए चित्रित किया गया है। राजस्थानी चित्रशैली में श्री कृष्ण जी को नायक के रूप में तथा राधा को नायिका के रूप में चित्रित किया गया है। वियोग रस को चित्रित करने के लिए प्रतीकों का भी साहरा लिया गया है जैसे ऊपर आकाश में लाल रंग का चन्दमा तथा आकाश में उड़ते दो पक्षी जो प्रेम का प्रतीक है, चित्रित किया गया है। चित्र में पृष्ठभूमि को खाली छोडा गया है। जो वियोग की स्थिति को स्पष्ट करता है।

करूण रसः–

जब धन अथवा कोई प्रिय वस्तु के नाश से अपने तथा प्रिय के अनिष्ठ की आशंका से दुख अथवा क्षोभ उत्पन्न हो जाता है तो उसे करूण रस कहते है राजस्थानी चित्रशैली में करूण रस की भरमार है,जोधपुर शैली में शीरी फरहाद कथानक पर आधारित चित्र करूण रस का उत्तम उदाहरण है। चित्र में फरहाद की मुत्यु को चित्रित किया गया है, वहीं पास में शौकाकुल शीरी को भी चित्रित किया गया है पास में कुछ युवतियों को भी दर्शाया गया है तथा एक वृद्ध को लाठी के साहरे शोक में डूबा हुआ चित्रित किया गया है। सम्पूर्ण चित्र में शोक का वातावरण निहित है।

अद्भुत रसः–

विचित्र अथवा आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर हदय में विस्मय आदि के जो भाव उठते है उसे अद्भुत रस कहते है राजस्थानी चित्रशैली में अद्भुत रस का बाहुलता से प्रयोग पाया जाता है। जोधपुर शैली में भी कृष्ण जी और गोवर्धन पर्वत विस्मयात्मक स्थिति दर्शायी गयी है जो अद्भुत रस का उत्तम उदाहरण है।

हास्य रसः–

किसी व्यक्ति अथवा किसी पदार्थ का अनोखा या विकृत रूप देखकर हदय में विनोद अथवा हास्य का भाव उत्पन्न होता है वहां हास्य रस की उत्पत्ति होती है। राजस्थानी चित्रशैली में हास्य रस का चित्रण बाहुलता से चित्रित किया गया है। मेवाड़ शैली में अद्भुत भिक्षुक को देखकर हास्य रस की उत्पत्ति होती है।

रोद्र रसः–

अपने तथा अपने प्रियजन या गुरू आदि की निन्दा, हानि, विरोद्र द्वारा जहां प्रतिरोध की भावना उत्पन्न होती है वहां रोद्र रस का संचार होता है। सिरोही शैली में मां दुर्गा असुरों का संहार करती हुई चित्रित की गयी है। सम्पूर्ण चित्र में गति विघमान है तथा यह चित्र रोद्र रस का उत्तम उदाहरण है।

वीर रसः–

राजस्थान वीर भूमि होने के कारण यहां के चित्रों में वीर रस को बाहुलता के साथ चित्रित किया गया है। यहां युद्धवीर, दयावीर, दानवीर, धर्मवीर के रूप में सभी रस पर्याप्त रूप में चित्रित किये गये है।

विभत्स रसः–

घृणा नामक स्थायी भाव से विभत्स रस की उत्पत्ति होती है, जोधपुर शैली में आदमी जानवर का सिर खाते हुये चित्रित किया गया है। इसके पास टोकरी में एक भैंसे का व एक ऊँट का सिर चित्रित किया गया है।

https://doi.org/10.31995/an.2025.v16i01.013

चित्र में युवक की भावाभिव्यक्ति देखकर विभत्स रस की उत्पत्ति होती है। कलात्मक दृष्टि से ही चित्र को श्रेष्ठता प्राप्त है।

भयानक रसः–

किसी भयानक वस्तु को देखकर या सुनकर किसी भयभीत व्यक्ति की चेष्ठा के उल्लेख से भयानक रस की उत्पत्ति होती है। राजस्थान की सिरोही शैली में देवी दुर्गा असुरों का संहार करती हुई चित्रित की गयी है। चित्र के अग्रभाव मे ंकटें पड़े असुरों के सिरों हाथ पैरों को देखकर भयभिव्यक्ति उत्पन्न होती है। असुरों की मुखाकृति इतनी भयानक बनी है कि देखकर हदय में भय की लहर दौड़ जाती है।

भक्ति रसः–

ईश्वर या देवता के विषय में जो रति भाव भक्त के हदय में उत्पन्न होता है। उसे भक्ति रस कहते है। राजस्थान में बल्ल्भ सम्प्रदय होने के कारण यहां राधा–कृष्ण भक्ति, रामायण, महाभारत, लोककथाओ, व पौराणिक कथाओं का बहुतायत से चित्रण हुआ है राजस्थान की किशनगढ़ शैली में कवि राजकुमार को पीले वस्त्रों में भक्ति करते हुए वृंदावन में चित्रित किया गया है तथा पीताम्बर वस्त्र धारण किये बनी–ठनी को हाथ में माला लिये चित्रित किया गया है। कलात्मक वृष्ठि से यह चित्र भक्ति रस का उत्तम उदाहरण है। पशु –पक्षियों का भावात्मक अंकन चित्रों में विशेष हुआ है। चित्र में वृक्षों पर क्रीड़ा करते हुए बन्दरों को दर्शाया गया है। जो हनुमान जी का प्रतीक है, चित्र में भक्ति भाव दृष्टव्य है तथा भक्ति रस की दृष्टि से भी चित्र श्रेष्ट है।

शान्त रसः–

संसार की निस्सारता तथा परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने पर बैराग्यता उत्पन्न होती है। बैराग्यता होने पर शान्त रस की उत्पत्ति होती है राजस्थान की बूंदी शैली में बंगाला हिंडोला का राग पुत्र चित्र में बंगाला को शिव लिंग के सामने पूजा–अर्चना करतें हुए चित्रित किया गया है तथा उसके सामने एक धार्मिक पुस्तक भी बनी है बंगाला का शान्त चित तथा पूजा अर्चना को देखकर शान्त रस की उत्पत्ति होती है। चित्र में शिवलिंग को अलंकारिक तथा कलात्मकता के साथ चित्रित किया गया है।

सन्दर्भः–

1. डा0 जयसिंह नीरज, राजस्थानी चित्रकला डॉ0 जयसिंह नीरज, राजस्थानी चित्रकला और हिन्दी कृष्ण काव्य
2. श्री केदार नाथ शर्मा, सम्मेलन पत्रिका
3. डा0 सी0 एल0 झां, कला के दार्शनिक तत्व
4. वासुदेव शरण अग्रवाल, कला और संस्कृति
5. असित कुमर हलदार, आर्ट एण्ड ट्रेडीशन

6. बी0एन0 गौ स्वामी ईसेन्स ऑफ इण्डियन आर्ट पृष्ठ–**208**
7. एरिक डिकिन्सन किशनगढ़ पेन्टिग पृष्ठ–**22**